

बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका

मृणाल रंजन

शोध निर्देशक: प्रो० प्रवीण उद्धव

वाद्य विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

उत्तर प्रदेश

Email: mrinalranjan007@gmail.com

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत बच्चों के व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका गहरा प्रभाव संगीत के दायरे से ले कर सुदूर विषयों तक फैला है, जो बच्चों के विकास के विभिन्न आयामों को प्रभावित करता है। संगीत में निहित भावनात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से बच्चों को एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराया जाता है जो रचनात्मकता, अनुशासन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देता है।

शास्त्रीय संगीत सीखने और अभ्यास करने से धैर्य, दृढ़ता और समर्पण की भावना पैदा होती है, क्योंकि इसकी जटिलताओं में महारत हासिल करने के लिए लगातार प्रयास की आवश्यकता होती है। इसके अलावा याद रखने की प्रक्रिया और मौखिक परंपरा संज्ञानात्मक क्षमताओं और स्मृति प्रतिधारण को सुदृढ़ करती हैं। संगीत में निहित अध्यात्म के माध्यम से



बच्चों को उनकी भावनाओं को प्रभावी ढंग से समझने और समझाने में मदद मिलती है। जैसे-जैसे बच्चे समूह प्रदर्शन में संलग्न होते हैं और अपने शिक्षकों और साथियों के साथ वार्तालाप करते हैं, वे सहयोग और परस्पर सम्मान का महत्व सीखते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत, अपने शाश्वत ज्ञान और इसकी कलात्मकता की उच्च कोटि होने के कारण, एक परिवर्तनकारी शक्ति का रूप धारण करता है, जो कलात्मक संवेदनशीलता और व्यक्तिगत विकास के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण के रूप में बच्चों के व्यक्तित्व का पूर्ण पोषण करता है।

प्रमुख बिन्दु: भारतीय शास्त्रीय संगीत, बच्चों का व्यक्तित्व विकास, भावनात्मक अभिव्यक्ति, अनुशासन, एकाग्रता

ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोच्च है। कवि ने कहा है -

“त्रिभुवन मानस वशीकरण मधुमय आकर्षण

शून्य गगन की रस लहरी का मधुर विकंपन.”

भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय उपमहाद्वीप का शास्त्रीय संगीत है। इसे साधारण रूप में “मार्ग संगीत” और “देशी संगीत” जैसे शब्दों का उपयोग करके वर्णित किया जाता है। भारत के शास्त्रीय संगीत की जड़ें हिंदू धर्म के वैदिक

साहित्य और भरत मुनि द्वारा रचित प्राचीन नाट्यशास्त्र में पाई जाती हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो मूलभूत तत्व हैं, राग और ताल। राग, स्वरों के विविध प्रदर्शनों पर आधारित, एक गहन परंतु जटिल मधुर संरचना का निर्माण करता है, जबकि ताल समय चक्र को मापता है। राग एक कलाकार को ध्वनियों से माधुर्य पैदा करने के लिए एक प्रेरणा देता है, जबकि ताल उन्हें काल-मान का उपयोग करके लयबद्ध सौन्दर्य प्रस्तुत करने के लिए एक रचनात्मक ढाँचा प्रदान करता है।ⁱ

बच्चों में व्यक्तित्व के विकास का महत्व:

व्यक्तित्व का विकास बच्चों के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक बच्चे का व्यक्तित्व बचपन में ही आकार लेना शुरू कर देता है। आत्मविश्वास, सहानुभूति, और प्रभावपूर्ण संचार कौशल जैसे सकारात्मक गुणों का पोषण करने से सामाजिक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में वृद्धि हो सकती है। ये लक्षण बच्चों को सार्थक संबंध स्थापित करने में आने वाली चुनौतियों को शालीनता से निभाने और विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल ढलने के लिए सशक्त बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, एक अच्छी तरह से विकसित व्यक्तित्व बच्चों के आत्म-सम्मान को बढ़ाता है, जिससे उन्हें अपनी रुचियों का पता लगाने, लक्ष्य निर्धारित करने और दृढ़ संकल्प के साथ उन्हें प्राप्त करने की दिशा में काम करने में मदद मिलती है। व्यक्तित्व के विकास में एक मजबूत नींव न केवल बच्चे के शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाती है, बल्कि उनके व्यवहार, निर्णय लेने की क्षमताओं और उनके समग्र कल्याण को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हुए एक सफल और पूर्ण जीवन के लिए आधार तैयार करती है।

बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रभाव की खोज:

विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि कम उम्र में भारतीय शास्त्रीय संगीत के संपर्क में आने से बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमताओं, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक कौशल पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस शैली की जटिल धुनें और लयबद्ध स्वराकृतियाँ मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों को उत्तेजित करते हैं, जिससे युवा दिमाग में रचनात्मकता, एकाग्रता और स्मृति प्रतिधारण में वृद्धि होती है। इसके अलावा, संगीत के ध्यान और भावनात्मक पक्ष भावनात्मक विनियमन और सहानुभूति में योगदान करते हैं, जिससे बच्चों को अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने और प्रबंधित करने की अनुमति मिलती है। इस कला को सीखने और अभ्यास करने से, बच्चों में धैर्य, अनुशासन और कुशल कार्य नीति भी विकसित होती है, क्योंकि कठोर प्रशिक्षण के लिए समर्पण और दृढ़ता की आवश्यकता होती है। कुल मिलाकर, बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रभाव सर्वांगीण, सहानुभूतिपूर्ण और बौद्धिक रूप से कुशल व्यक्तित्व को विकसित करने की इसकी क्षमता को उजागर करता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति और विकास:

भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति और विकास के विषय में हजारों वर्ष पहले प्राचीन वेदों से जानकारी मिलती है। लगभग तीन सहस्राब्दी पहले रचित वेदों को संगीत का मूल स्रोत माना जाता है। सामवेद में सभी सात स्वरों का उपयोग करने वाले मंत्र उल्लिखित हैं, जो वैदिक सप्तक या सामगान प्रणाली का आधार बनाते हैं। समय के साथ

संगीत का पवित्र ज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से अग्रसरित किया गया. इस प्रणाली में शिष्यों को अपने गुरुओं से मौखिक शिक्षा प्राप्त होती थी, जिससे कला को उसके प्रामाणिक रूप में संरक्षित किया जाता था. प्राचीन काल में लिखित अभिलेखों की अनुपस्थिति के बावजूद, भरतमुनि द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' को भारतीय संगीत के इतिहास का पहला लिखित साक्ष्य माना जाता है, जिसमें भारतीय शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रम को आकार देने वाले विभिन्न पक्षों का उल्लेख किया गया है. जैसे-जैसे समय बीतता गया, शारंगदेव द्वारा लिखित 'संगीत रत्नाकर' जैसे अतिरिक्त ग्रंथ सामने आए, जो इस सांगीतिक विरासत के विकास और विस्तार में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं.ⁱⁱ

भारत में संगीत का सांस्कृतिक और पारंपरिक संदर्भ:

भारत में संगीत का सांस्कृतिक और पारंपरिक संदर्भ समृद्ध, विविध और देश की विरासत में गहराई से समाया हुआ है. संगीत सदियों से विभिन्न भारतीय अनुष्ठानों, समारोहों और उत्सवों का एक अभिन्न अंग रहा है, जो असंख्य सांस्कृतिक प्रभावों और क्षेत्रीय परंपराओं को दर्शाता है. भारत का प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट संगीत शैलियों, वाद्ययंत्रों और गायन तकनीकों का दावा करता है, जो भारतीय संगीत के सार को संरक्षित करते हुए पीढ़ियों से चली आ रही हैं. हिंदुस्तानी और कर्नाटक जैसी शास्त्रीय संगीत परंपराएं इस प्राचीन कला रूप के स्तंभों के रूप में खड़ी हैं, जबकि लोक संगीत, भक्ति गीत और बॉलीवुड संगीत देश के संगीत में जीवंत आयाम जोड़ते हैं. नृत्य, कविता और कहानी कहने के साथ विभिन्न संगीत तत्वों की परस्पर क्रिया भारतीय संगीत की सुंदरता और गहराई को और बढ़ा देती है, जिससे यह देश की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन जाता है.

भारतीय संस्कृति में संगीत और आध्यात्मिकता के बीच संबंध:

भारतीय संस्कृति में संगीत और आध्यात्मिकता के बीच का संबंध बहुत गहरा है. सहस्राब्दियों से, संगीत को परमात्मा से जुड़ने और आत्मा की अंतरतम भावनाओं को व्यक्त करने का एक शक्तिशाली माध्यम माना जाता रहा है. भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न रूपों, जैसे कि हिंदुस्तानी और कर्नाटक, में धुन और लय को आध्यात्मिक उत्कृष्टता की भावना पैदा करने के लिए जटिल रूप से अभिनिर्मित किया जाता है. संगीत ने धार्मिक समारोहों, भक्ति प्रथाओं और ध्यान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. यह मानव और परमात्मा के बीच एक पुल के रूप में स्थित रहता है जो गहन आध्यात्मिक अनुभव की सुविधा प्रदान करता है. रागों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण और मंत्रों की ध्यानपूर्ण पुनरावृत्ति भारतीय आध्यात्मिकता के मूल सार के साथ गूंजती है, जो अभ्यासकर्ताओं और श्रोताओं के दिलों में एकता, शांति और उत्कृष्टता की भावना को बढ़ावा देती है.

व्यक्तित्व की परिभाषा एवं उसके घटक:

व्यक्तित्व का तात्पर्य विचारों, भावनाओं और व्यवहारों की अद्वितीय और स्थायी आकृति से है जो किसी व्यक्ति की विशेषता बताते हैं. इसमें विभिन्न घटकों की एक जटिल परस्पर क्रिया अंतर्निहित है जो किसी के विशिष्ट लक्षणों और प्रवृत्तियों को आकार देती है. व्यक्तित्व के घटक निम्नलिखित हैं:

1. लक्षण: ये स्थिर और सुसंगत विशेषताएं हैं जो व्यक्ति के सामान्य और विशिष्ट परिस्थितियों में किये गए व्यवहार को प्रभावित करती हैं, जैसे अंतर्मुखता या बहिर्मुखता।
 2. स्वभाव: यह जन्मजात गुणों को संदर्भित करता है और किसी व्यक्ति की भावनात्मक प्रतिक्रिया और संवेदनशीलता को निर्धारित करता है।
 3. चरित्र: चरित्र में नैतिक आयाम सम्मिलित होते हैं, जो किसी व्यक्ति के मूल्यों और सिद्धांतों की अखंडता की भावना को दर्शाते हैं।
 4. आत्म-अवधारणा: यह घटक दर्शाता है कि कोई व्यक्ति स्वयं को कैसे समझता है और मूल्यांकन करता है। आत्म-अवधारणा उनके आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास को प्रभावित करती है।
 5. आत्म-प्रभावकारिता: यह किसी व्यक्ति के कार्यों को पूरा करने और लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता में विश्वास से संबंधित है, जो उनकी प्रेरणा और दृढ़ता को प्रभावित करता है।
 6. पहचान: पहचान सामाजिक और सांस्कृतिक जुड़ाव के संबंध में स्वयं की भावना को संदर्भित करती है, जिसमें जातीयता, लिंग और धर्म जैसे कारक शामिल होते हैं।
 7. दृष्टिकोण: दृष्टिकोण किसी व्यक्ति की लोगों, वस्तुओं या विचारों के प्रति राय और मूल्यांकन हैं, जो उनके व्यवहार और निर्णय लेने की क्षमता को आकार देते हैं।
 8. चुनौतियों का सामना करने की शक्ति: ये ऐसी रणनीतियाँ हैं जिनका उपयोग व्यक्ति तनाव और चुनौतियों से निपटने के लिए करते हैं।
- व्यक्तित्व के इन घटकों को समझने से व्यक्तियों की विशिष्टता और विभिन्न स्थितियों में उनके विचारों, भावनाओं और कार्यों को प्रभावित करने वाले कारकों को समझने में मदद मिलती है।

बच्चों में व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक:

बच्चों में व्यक्तित्व विकास कई कारकों से प्रभावित होता है जो उनके व्यक्तित्व और व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें से कुछ प्रभावशाली कारक निम्नलिखित हैं:

1. आनुवंशिकी: माता-पिता से विरासत में मिले आनुवंशिक गुण बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। कुछ लक्षण, जैसे स्वभाव और कुछ भावनाओं की प्रवृत्ति, अक्सर जीन के माध्यम से पारित हो जाते हैं।
2. पर्यावरण: परिवार, विद्यालय और समुदाय सहित बच्चे के परिवेश का उनके व्यक्तित्व विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पोषण और सहायक वातावरण सकारात्मक गुणों को बढ़ावा देते हैं, जबकि प्रतिकूल परिस्थितियाँ व्यक्तित्व विकास में चुनौतियाँ पैदा कर सकती हैं।
3. पालन-पोषण की शैली: जिस तरह से माता-पिता अपने बच्चों के साथ बातचीत करते हैं, वह उनके व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधिकारिक पालन-पोषण, गर्मजोशी और उचित अनुशासन की विशेषता, सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देता है।

4. सामाजिक मेलजोल: सहकर्मिता और सामाजिक मेलजोल बच्चे के व्यक्तित्व विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। साथियों के साथ सकारात्मक अनुभव सामाजिक कौशल और आत्म-सम्मान को बढ़ा सकते हैं, जबकि नकारात्मक बातचीत से भावनात्मक चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं।

5. जीवन के अनुभव: महत्वपूर्ण घटनाएँ, जैसे आघात या जीवन में आए प्रमुख परिवर्तन, बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर स्थायी प्रभाव छोड़ सकते हैं। सकारात्मक अनुभव लचीलेपन को बढ़ावा दे सकते हैं, जबकि नकारात्मक अनुभवों से मुकाबला करने में कठिनाई हो सकती है।

व्यक्तित्व को आकार देने में प्रारम्भिक अनुभवों की भूमिका:

व्यक्तित्व को आकार देने में प्रारम्भिक अनुभवों की भूमिका मनोविज्ञान में अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण विषय है। कई अध्ययनों ने किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व लक्षणों और व्यवहार के आधार पर प्रारम्भिक जीवन के अनुभवों के गहरे प्रभाव को प्रदर्शित किया है। बचपन में प्रतिकूल अनुभव, जैसे दुर्व्यवहार या उपेक्षा, व्यक्तित्व में दीर्घकालिक परिवर्तन का कारण बन सकते हैं, जिसमें विक्षिप्तता में वृद्धि और कम सहमतता शामिल है। दूसरी ओर, सकारात्मक प्रारम्भिक अनुभव, जैसे देखभाल करने वालों के साथ लगाव, एक स्थिर और भावनात्मक रूप से लचीले व्यक्तित्व के विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। ये निष्कर्ष सामूहिक रूप से उस महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हैं जो प्रारम्भिक अनुभव किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने, उनके मनोवैज्ञानिक कल्याण और जीवन भर सामाजिक संबंधों की नींव रखने में निभाते हैं।

संगीत शिक्षा के माध्यम से संज्ञानात्मक सूझ का विकास:

संगीत की शिक्षा के माध्यम से संज्ञानात्मक सूझ का विकास हाल के वर्षों में बढ़ती रुचि और शोध का विषय रहा है। अध्ययनों से पता चला है कि संगीत सीखने से स्मृति, ध्यान, भाषा कौशल सहित विभिन्न संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, एक वाद्ययंत्र बजाने की क्रिया में मस्तिष्क के कई क्षेत्रों का समन्वय, बेहतर मानसिक कौशल और हाथ तथा आँखों के समन्वय को बढ़ावा देना परिलक्षित होता है। इसके अलावा, संगीत में जटिल ध्वन्याकृतियाँ और संरचनाएँ मस्तिष्क को इस प्रकार उत्तेजित करती हैं, जिससे समस्या-समाधान की क्षमताओं और रचनात्मक सोच में वृद्धि होती है। संगीत शिक्षा में न केवल कला के प्रति गहरी सराहना पैदा करने की क्षमता है, बल्कि यह सभी आयु वर्गों में संज्ञानात्मक क्षमताओं और समग्र मस्तिष्क स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी काम करता है।ⁱⁱⁱ

मस्तिष्क के विकास पर राग-आधारित शिक्षा का प्रभाव:

राग-आधारित शिक्षा, भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा का एक मूलभूत पक्ष है जो मस्तिष्क के विकास पर इसके संभावित प्रभाव के लिए शोध हेतु बढ़ती रुचि का विषय रहा है। इस प्रशिक्षण में रागों और उनकी भावनात्मक अभिव्यक्तियों का व्यवस्थित अध्ययन शामिल है। हाल के शोध से पता चलता है कि राग-आधारित शिक्षा के अनुशासित अभ्यास से मस्तिष्क पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। ऐसा माना जाता है कि यह

संज्ञानात्मक क्षमताओं, स्मृति प्रतिधारण और भावनात्मक विनियमन को बढ़ाता है। इसके अलावा, रागों में महारत हासिल करने में निहित जटिल स्वराकृतियाँ और लयबद्ध रचनाएँ मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों को उत्तेजित करती हैं और समग्र संज्ञानात्मक सूझ को बढ़ाती हैं। जैसे-जैसे अध्ययन का यह क्षेत्र विकसित हो रहा है, यह स्वस्थ मस्तिष्क विकास और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक और चिकित्सीय वातावरण में संगीत-आधारित हस्तक्षेपों के एकीकरण के लिए आशाजनक निहितार्थ रखता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के माध्यम से भावनात्मक विकास:

भारतीय शास्त्रीय संगीत के माध्यम से भावनात्मक विकास एक गहन यात्रा है जो आत्मा की गहराइयों को छूती है। प्राचीन परंपराओं और गीतों में निहित यह कला रूप केवल मनोरंजन से आगे बढ़कर भावनाओं को पोषित करने और आंतरिक विकास को बढ़ावा देने का एक शक्तिशाली उपकरण बन गया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के जटिल राग और मनमोहक लयाकृतियाँ श्रोता के भीतर आनंद और शांति से लेकर उदासी और आत्मनिरीक्षण तक असंख्य भावनाओं को जगाने की क्षमता रखते हैं। जैसे-जैसे व्यक्ति स्वयं को स्वरो की जटिल क्रिया में डुबोता है, उनकी भावनात्मकता और बुद्धिमत्ता बढ़ती है, जिससे उसे अपनी भावनाओं की गहरी समझ विकसित करने और दूसरों की भावनाओं के साथ सहानुभूति रखने की अनुमति मिलती है।^{iv}

अकादमिक शिक्षा में भारतीय शास्त्रीय संगीत का स्वीकरण:

अकादमिक शिक्षा में भारतीय शास्त्रीय संगीत को स्वीकृत करने से छात्रों को कई लाभ मिलते हैं। अपने आंतरिक सांस्कृतिक मूल्य से परे, यह प्राचीन कला रूप रचनात्मकता का पोषण करता है, अनुशासन पैदा करता है, और परंपरा और विरासत के लिए गहरी सराहना को बढ़ावा देता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को पाठ्यक्रम में शामिल करने से, छात्रों को जटिल लय, धुनों और इस कला की गहन भावनात्मक गहराई की जानकारी मिलती है। इसके अलावा, यह संज्ञानात्मक क्षमताओं, एकाग्रता और स्मृति प्रतिधारण को बढ़ाता है। सीखने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का पोषण करके, यह एकीकरण छात्रों को अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों को अपनाने के लिए सशक्त बनाता है और उनके अंदर सांस्कृतिक विरासत पर गर्व की भावना को बढ़ावा देता है। शिक्षा में भारतीय शास्त्रीय संगीत को शामिल करने से परंपरा और आधुनिकता के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का मार्ग प्रशस्त होता है, जो अपनी सांस्कृतिक पहचान के लिए गहरी समझ और प्रशंसा के साथ व्यक्तित्व के विकास को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष:

संगीत के माध्यम से बच्चों की शिक्षा के लिए समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना उनके आमूलचूल विकास के लिए महत्वपूर्ण है। दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के ब्रेन एंड क्रिएटिविटी इंस्टीट्यूट में 2016 के एक अध्ययन में पाया गया कि बचपन में संगीत के अनुभव वास्तव में मस्तिष्क के विकास को गति दे सकते हैं, विशेषकर भाषा अधिग्रहण और पढ़ पाने के कौशल के क्षेत्र में।^v भारतीय शास्त्रीय संगीत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बल पर इस प्रयास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और युवा शिक्षार्थियों को कई प्रकार से लाभ प्रदान करता है।

केवल संगीत का कौशल सिखाने के अलावा, यह भावनात्मक अभिव्यक्ति और संज्ञानात्मक क्षमताओं का पोषण करते हुए अनुशासन, एकाग्रता और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, भारतीय शास्त्रीय संगीत का सार मन, शरीर और आत्मा के सहज एकीकरण में निहित है, जो बच्चों को समग्र रूप से शिक्षा का अनुभव प्रदान करता है। इन प्राचीन संगीत परंपराओं को संरक्षित और बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देकर, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत भावी पीढ़ियों के लिए जीवित और समृद्ध बनी रहे। यह अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाला एक माध्यम है, जिससे हमारी सांस्कृतिक जड़ों में पहचान और गौरव की भावना पैदा होती है। मंत्रमुग्ध कर देने वाले रागों, जटिल लय और मधुर स्वरलहरियों के संपर्क के माध्यम से, बच्चे न केवल अपनी विरासत के लिए सराहना पाते हैं, बल्कि विविध सांगीतिक अभिव्यक्तियों के लिए गहरी समझ और सम्मान भी विकसित करते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति उनके प्रेम को पोषित करके, हम उनमें अपनेपन की भावना पैदा करते हैं और उन्हें इस शाश्वत परंपरा के पथप्रदर्शक बनने, इसके निरंतर संवर्धन और वैश्विक मान्यता में योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसा करने में, हम अपने बच्चों के व्यक्तित्व का एक गहन सांस्कृतिक और कलात्मक नींव बनाते हैं जो उनके जीवन को समृद्ध बनाएगा और संगीत तथा उससे आगे की दुनिया के लिए एक उज्ज्वल भविष्य को आकार देता है।

संदर्भ सूची:

ⁱ Joshi, Umesh. *Bharatiya Sangeet Ka Itihaas*. Firozabad: Mansarovar Prakashan Mahal, 1957, p. 1

ⁱⁱ Ibid, 115-219

ⁱⁱⁱ Benson Charles Odongo Okongo, (Promoting Child Development Through Music: A Comparison of Preschool Teachers' Perspectives In Kenya And United States, Wichita State University, 2009), pp. 20-22

^{iv} Elisabeth Dumont, Elena V. Syurina, Frans J. M. Feron, and Susan van Hooren (Music Interventions and Child Development: A Critical Review and Further Directions, *Frontiers in Psychology*), 2017, 5-7

^v Bright Horizons, (Children and Music: Benefits of Music in Child Development, 2022

www.brighthorizons.com